मन्नू भंडारी की भाषा : यानी जीवन की भाषा

शोध पत्र-हिन्दी

* उर्मिला शिरीष

''जिस देश में देव तुल्य राजनेताओं की परम्परा रही हो, वहाँ राजनीति का ऐसा पतन! कभी–कभी मन में एकदम वैराग्य जाग जाता है पर राजनीति में जहाँ तक अपने को धंसा लिया वहाँ से निकल भी तो नहीं सकते। निकलने का सीधा अर्थ है हार मान लेना। और जीवन में एक यही तो बात है जिसे वे कभी नहीं मान सकते। पिछले चुनाव में हारकर भी मन से वे उस हार को एक दिन के लिए भी स्वीकार नहीं कर सके। उस हार को जीत में बदलना ही है–जो भी हो जैसे भी हो कृ....।'' (उपन्यास–'महाभोज' पृ ठ–29) ''क्योंकि दराज में विपिन का केवल अतीत ही नहीं था, वर्तमान भी था और उसमें भविष्य की योजनाएँ भी। वह जैसे–जैसे विपिन के व्यक्तिगत जीवन के निकट होती जा रही थी अनजाने और अनचाहे ही विपिन से दूर होती जा रही थी। धीरे–धीरे मनों की यह दूरी शरीरों में भी फैलती गयी थी और वे अनायास ही एक दूसरे के लिए निहायत अपरिचित से हो गये। फिर उनके हिसाब अलग रहने लगे, सम्पर्क और संबंध अलग हुए।'' (कहानी–'बंद दराजों का साथ'–पृ ठ–42) ''लेखा को लिए हुए तांगा चरमर–चरमर करता खेत–खलिहानों से गुजर रहा था ऊपर दूर–दूर तक फैला नीला चमकीला आसमान और नीचे हरे–भरे मैदान पेड़ों के झुरमुट, छोटे–छोटे पोखर–पोखरे में नहाते नंग–धड़ंग बच्चे।

मन को डुबो देने वाली शांति और क्लान्त थके दिमाग को सहला देने वाले दृश्य। अमलतास और गुलमोहर के पेड़ों की फूलों से लदी टहनियाँ तांगे की छत को छू–छूकर लेखा की अगवानी कर रही थी।'' (कहानी–'एखाने आकाश नाई' –पृ ठ–57) मन्नू भंडारी की भाषा के ये तीन अंश उनके लेखन की उन छवियों को दर्शाते हैं जिसमें मानवीय मन की अंतर्तहों में चलते द्वन्द्वों, संघर्षों तथा भावनाओं को जीवंतता के साथ पाठकों के भीतर उतार देते हैं। मनोविज्ञान, परिवेश और चरित्रों के विविध रूपों को व्यक्त करती मन्नू भंडारी की भाषा उनके लेखन की सबसे बड़ी ताकत है। यह ताकत और भाषा का यह रंग और तेवर मन्नू भंडारी की भाषा को न सिर्फ अलग पहचान देता है बल्कि भाषा का एक नया रूप भी इस दौर की कहानियों में एक खास किस्म की भाषिक संरचना को स्थापित करता है। मन्नू भंडारी का समूचा साहित्य जिस सहजता, संवेदना तथा पठनीयता के लिए जाना जाता है वही सहजता, संवेदना तथा पठनीयता उनकी भाषा में अंतर्निहित है। अन्यथा क्या वजह है कि मन्नू भंडारी व्यापक पाठक समाज के बीच उतनी ही लोकप्रिय रहीं हैं जितनी साहित्यिक तथा समालोचक जगत में। शास्त्रीयता, कलात्मकता तथा अमूर्त के प्रभाव से दूर कृ पानी की निर्मल धारा सी बहती मन्नू जी की भाषा अपने सधे, सशक्त और सघन रूप में अपना प्रभाव छोड़ती है। मन्नू की भाषा को पढ़ते हुए मुझे हर बार यही महसूस होता रहा है कि श्रेष्ठ, सुंदर और हृदयस्पर्शी भाषा वही होती है, जो भावनाओं को अनेक रंगों में रंगती है, जो भावों को सम्प्रेषित करने में अहम भूमिका निभाती है, जो पात्रों के व्यक्तित्व को उद्‌भाषित करती है, जो जड़ चीजों में भी प्राण डाल देती है और सांकेतिक रूप से वह सब कह देती है, जो तमाम–तमाम शब्दों में भी नहीं कहा जा सकता है। मन्नू जी की भाषा की मुखरता और मौन दोनों ही गहरे तक प्रभावित करते हैं।

मन्नू जी भाषा के साथ बहती हैं और पाठकों को भी बहाकर ले जाती हैं। मन्नू भंडारी की भाषा ने वह कमाल किया है जो साहित्य को आम से लेकर खास पाठकों, बुद्धिजीवियों तथा विद्वानों तक पहुँचा सकी है। उनकी कहानियों की भाषा हो या उपन्यासों की या आत्मकथा की उसमें एक खास किस्म की तरलता, तटस्थता, साफगोई, हास्य, चित्रात्मकता, व्यंग्यात्मकता तथा भावनात्मकता दिखाई देती है। थोपी गयी, बनी–बनायी भाषा का प्रयोग मन्नू भंडारी नहीं करतीं हैं बल्कि सहज ढंग से निःसृत होती भाषा उनके कथ्य और रचनात्मकता की खूबसूरती को बढ़ाती है। व्यक्ति चित्र को कितनी सजीवता के साथ वे थोड़े से शब्दों में कह देती है, यह उनका ही कमाल हो सकता है। जैसे ''चतुर अपराधी ही सबसे अधिक आक्रामक मुद्रा अपनाता है कभी–कभी।''[7] (उपन्यास महाभोज–पृ ठ 164) इसी तरह वे अपने आसपास के परिवेश को इतनी सजीव भाषा में व्यक्त करती हैं कि लगता है समूचा परिवेश आंखों के सामने है। परिवेश के कितने ही रूप उनकी रचनाओं में जीवंत हो उठते हैं, वहाँ वे शब्दों को इस तरह गढ़ती हैं जैसे कोई बच्चा अपनी ही मस्ती में गेंद उछाल रहा हो। 'महाभोज' की भाषा में जिस राजनीतिक पृ ठभूमि की झलक दिखाई देती है और उसमें जो चरित्र आते हैं, वह उस वर्ग का प्रतिनिधित्व तो करते ही हैं, भाषा के द्वारा भी उनके संपूर्ण व्यक्तित्व, वर्ग, जाति तथा प्रवृत्तियों को समझा जा सकता है। यही वजह है कि 'महाभोज' की भाषा में जहाँ व्यंग्यात्मकता है, तीक्ष्णता है, चुभन है, वर्गीय प्रवृत्ति है।

सहज–सरल, सम्प्रेषित करने वाली भाषा में एक रचनाकार अपने विराट अनुभव जगत् को कह दे, यह कोई आसान बात नहीं है बल्कि मन्नुजी की विलक्षणता ही इसमें है कि वे गहरी से गहरी बात को सहज ढ़ंग से कह देती हैं। जीवन की विराटता की बात हो, या दर्शन की जीवन का मार्मिक पक्ष हो या गूढ़ बातें उनकी भाषा में आते ही सारी चीज़ें जैसे साफ–साफ समझ में आने लगती हैं। मनोविज्ञान पर मन्नूजी की गहरी पकड़ है इसलिए जहाँ–जहाँ अव्यक्त को व्यक्त करने की बात आती है मन्नूजी की कलम स्वतः ही मन को खोलने वाली भाषा रचती जाती है–''तब मंजरी अपने ही घर में बहुत अकेली हो उठी थी। और सब कुछ

*59-बी, जानकी नगर, चूना भट्टी, कोलार रोड़, भोपाल

बड़ा वीरान लगने लगा था। हर काम बोझिल लगने लगा था। खाली समय और जी बोझिल वह घंटों किताब खोले बैठी रहती थी, पर पंक्तियाँ केवल आँखों के नीचे से गुजरती थी, मन उनसे अछूता रहता था। वह घर के सारे खिड़की दरवाजे खुले रखती थी, फिर भी लगता रहता था कि साफ हवा के अभाव में घर की हवा धीरे–धीरे ज़हरीली होती जा रही है और कोई है, जो उसके देखते–देखते मरता जा रहा है।'' (बंद दराजों के साथ–पृ ठ 42)। स्त्री मन की इस तड़प को इससे अच्छी भा ा में व्यक्त नहीं किया जा सकता था। 'स्त्री सुबोध ानी' कहानी की भाषा में जिस चपलता, जिस तीव्रता, चुटीलेपन, कटाक्ष और 'स्वभाव' की परतें खोलती भाषा बुनी गयी है, वह इस कहानी को सीधे–सीधे पाठकों के साथ जोड़कर चलती है। मन्नूजी कहानी सुनाते हुए बतरस का मजा, किस्सा सुनाने का मज़ा और इस कथारस को बराबर बनाये रखने की कला उनकी भाषा की नैसर्गिक संरचना का सुंदर उदाहरण है – ''मेरा अपने बॉस से प्रेम हो गया। वाह! आपके चेहरों पर तो चमक आ गई। आप भी क्या करें? प्रेम कम्बख्त है ही ऐसी चीज़। चाहे कितनी ही पुरानी और घिसी–पिटी क्यों न हो जाये एक बार तो दिल धड़क ही उठता है चेहरे चमचमाने लगते हैं। खैर, यह तो कोई अनहोनी बात न थी।

डॉक्टरों का नर्सों से, प्रोफेसरों का अपनी छात्राओं से, अफसरों का अपनी स्टेनो–सेक्रेटरी से प्रेम हो जाने का हमारे यहाँ आम रिवाज है। यह बात बिल्कुल अलग है कि उनकी ओर से इसमें प्रेम कम और ागल ज्यादा रहता है। पर यह बात तो मुझे बहुत बाद में समझ में आई। मैंने तो अपनी ओर से पूरी ईमानदारी के साथ ही शुरू किया था। ईमानदारी और समर्पण के साथ।'' (कहानी–'स्त्री सुबोधनी'–पृष्ठ 77) 'एक कहानी यह भी' की भाषा में आत्मालाप आ सकता था, अतिभावुकता भी आ सकती थी लेकिन मन्नू जी ने कितनी ही बातों तथा प्रसंगों को तराशी हुई, सांकेतिक भाषा में कह दिया है, जो उनके व्यक्तित्व, स्वभाव तथा लेखक की गरिमा, दृढ़ता, भव्यता तथा गंभीरता को दर्शाती हैं। कहीं भी मन्नू जी की भाषा संयम नहीं खोती है। अक्सर आत्मकथाओं में यह देखा गया है कि व्यक्तिगत जीवन की बातें कहते हुए भाषा फिसल जाती है या बहुत भावुकता, सहानुभूति और आत्मपरकता का रंग भाषा में घुल जाता है पर मन्नूजी ने जिस तटस्थता के साथ भाषा का प्रयोग किया है वह उनकी जैसी विलक्षण लेखिका ही कर सकती है–मैं भी सोचती हूँ कि सामान्य जीवन में तो उम्र के इस बिन्दु पर आकर जिंदगी की उठा–पटक, जद्दोजहद और संघर्षो से थका–हारा मन सुस्ताने का सिलसिला शुरू करता है क्योंकि संबंधों के सारे कोने घिसघिसाकर ऐसे फिट हो जाते हैं कि तरह–तरह के जतनों का खेल डाले बिना भी गाड़ी चलती चलती रहती है–सहज, अनायास। मैंने भी संबंधों की उठा–पटक तो बहुत झेल ली ज़िंदगी को बस अब तो एक सहज, सामान्य और सकारात्मक जीवन की दिशा में ही बढ़ना है।'' (आत्मकथा–'एक कहानी यह भी'–पृष्ठ 189) ''प्रत्येक की जिंदगी में अपने अंतरंग संबंधों के कुछ निजी पन्ने होते हैं–इतने निजी कि उनकी यह निजता ही उन्हें जग–जाहिर करने में बाधक बन जाती है।'' ('वही'–पृ ठ 197) मन्नूजी की आत्मकथा की भाषा अनुशासन में ढली भाषा है कृ व्यक्तिगत प्रसंग हो या रचनात्मक या अन्य घटनाक्रमों से जुड़े प्रसंग मन्नू जी विचारशील, परिपक्व, आत्मानुशासन और संयमित भाषा का प्रयोग करते हुए उन तमाम जटिलताओं और दुरूहताओं से बचती हैं जो किसी भी बात को या प्रसंग को सीधे सहज ढंग से प्रस्तुत न कर सके। यह माना जाता है कि समय के साथ हर रचनाकार की भाषा बदलती है, परिपक्व होती है, परम्परा से चली आ रही भाषा से अलग वह स्वयं की भाषा गढ़ता है, रचता है, उसको अपनी पहचान देता है, स्वरूप और स्वर देता है, उसके मुहावरे उसकी लाक्षणिकता उसके रूपक, उसकी ध्वनियां उसके शब्द–प्रयोग सब कुछ बदलते हुए अपना रूप गढ़ते हैं। वे प्रयोग के लिए प्रयोग नहीं करती हैं बल्कि उनकी भाषा में नये मुहावरे, नयी शब्द संरचना और उनको प्रयोग में लाने की कला ही उनकी भाषा को विशिष्ट बनाती है। मन्नू जी की भाषा के कुछ उदाहरण इसीलिए मैंने शुरू में दिए थे कि भाषा के वे रूप अलग–अलग स्थितियों, पात्रों तथा परिवेश को व्यक्त करते हैं। उनकी भाषा में अनेक स्थल ऐसे आते हैं, जहां सूक्तियों की तरह वाक्यों का प्रयोग किया गया है। ये सूक्ति वाक्य जीवन, प्रकृति और व्यक्तियों के रहस्यमय से लगने वाले स्थलों को खोलते जाते हैं और बताते हैं कि जीवन या व्यक्ति जो दिखाई दे रहा है, वह उतना ही या वैसा ही नहीं है। भाषा देश, जाति, समाज, व्यक्ति तथा वर्ग की पहचान होती है। मन्नूजी ने हर पात्र तथा स्थिति को व्यक्त करते हुए भाषा पर खासा ध्यान दिया है। उनका लेखन कभी भी कहीं भी अपनी भाषा नहीं बोलता है न बोलने की कोशिश करता है बल्कि जैसा परिवेश वैसी भाषा। यही बात रचनाकार को बड़ा बनाती है कि वह रचना में या भाषा में स्वयं रहकर भी स्वयं को अलग रखे। यद्यपि मन्नूजी की भाषा के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है और लिखा जाता रहेगा। लेकिन मन्नू जी की कहानियें, उपन्यासों तथा आत्मकथा को पाठक बार–बार पढ़ते रहेंगे, सराहते रहेंगे क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी बात को, उनकी भावनाओं को, उनके सपनों को, उनके सुख–दुःखों को, उनकी अपनी भाषा में कहा गया है। 'अपनेपन' की 'अपने होने' की यह प्रतीति ही मन्नूजी की भाषा को उस भाषा को जिसमें उनका साहित्य रचा गया है–अनंतकाल तक याद रखा जायेगा और बार–बार पढ़ा जायेगा क्योंकि भावनाओं को व्यक्त करने वाली भाषा ही कालजयी और सार्थक होती है, सच्ची और उदात्त होती है। यही वैशिष्ट्य मन्नू भंडारी को सबसे अलग पहचान देता है। भाषा उनकी सर्जनात्मक क्षमताओं, विविधताओं का दर्पण है जिसमें हर चीज़ साफ–साफ दिखाई देती है और हर शब्द की ध्वनि स्पष्ट सुनाई देती है, यह चमत्कृत कर देने वाली भाषा नहीं है बल्कि एकदम मौलिक और जीवंत भाषा है, जो शब्दशः पाठकों के रागात्मक, भावनात्मक, आत्मिक तथा मानवीय स्तर पर गहराई से जुड़ी हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

❖ मेरी प्रिय कहानियां ❖ मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियां (संपादित कहानियां) ❖ मेरी प्रिय कहानियां ❖ मन्नू भंडारी की प्रतिनिधि कहानियां (कहानी संग्रह) ❖ महाभोज (उपन्यास) ❖ एक कहानी यह भी (आत्मकथा)